

277
Garbha
Gita (Nep)

आशा सहकारी
22/5 I
ASHA ARCHIVES

१०१

श्रीगणेशायनमः ॥ अर्जुनविन्निगर्हन् हेमगवान् इमनुव्यहस्वका अर्थलेगर्भ
वासजरामराभैद्युमिद्युमिरहं हन् क्वा अर्थलेजन्तु देन हेजना दनः मलाइक
हन् हवस् ॥ १ ॥ श्रीभगवान् आत्तागर्दाभया हे अर्जुन मायाले अंधा भयाका

श्रीगणेशायनमः ॥ अर्जुन उवाच ॥ गर्भवासजरामृत्युं किम

भैभमतेनर ॥ किमर्थं जन्मरहितं कथयस्व जनार्दन ॥ १ ॥ श्रीभ

गवान् उवाच ॥ मायामूढश्च अवस्पसन्सारस्य विलायेने आसा

काननतेयात्तिजीवनं धेनसंपदा ॥ २ ॥ मूढहृक्कोयोसंसारजोह

मूढहृक्कोयोसंसारजोह सोभिन्नजोदेविह येक आशा कन होडि रजठ
नर धेनसंपतिमारह्या किमायाह भनिभगवानले आत्तागन्या हे अर्जुन ॥ २ ॥

राम

॥ १ ॥

भगवान्कावचनमुनिकन फेरि अर्जुन विंतिगदा भया हे भगवान् यो संसार
हृषि विषय वंधन देखि भया कि आसा कन वेसगारि क्यो ते जिति छ को न कर्म

अर्जुन वाच ॥ आशा केन जिता पाय संसार विषय वंधनात् ॥ केन कर्म

प्रयोगेन लोक मुच्यत वन्धनात् ॥ ३ ॥ श्री भगवान् उवाच ॥ आस

मे कं त्यजेत यस्त नीराशा गृह्यते यादि ॥ तेष्कर्म कर्तव्यं प्राणि

कर्मै न ला पाते ॥ ४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

गती ले लोक ह रु वंधन देखि न मुक्त हुंछ ॥ ३ ॥ यति अर्जुन ले विन्तिग

चाप छि श्री भगवान् आज्ञा गर्ह न हे अर्जुन एक आसा कन जो ना हो

जिनि राश कन पक्रंछ निष्कर्म गारि कने जो ना कर्म गर्ह सो प्राणि कर्म लेनि

सकुरेन ॥ ४ ॥

ग. गी

अर्जुन विनिगर्ह्य ॥ जसै काम क्रोध तसै लोभ मा ॥ भमरा भैरया कि मा
याज क काम न मा छन ॥ तस्का कर्म को ना सक डो गरि होला हे हरे मलाइ आ

अर्जुन उवाच ॥ काम क्रोध सथा लोभ भमरा यास्त थै वच ॥ एते
मन सिवर्तने कर्म नाश कथं हरे ॥ ५ ॥ श्री भगवान उवाच ॥ व
ह्मिद ह्यते कर्म पुन ॥ कर्म न लिप्यते ॥ निर्मल हि मनो भूत्वा
पुनर्जन्म न विधत्ते ॥ ६ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

ग्या गर्त ह्वय भानि अर्जुन ले विनिगया ॥ ५ ॥ श्री भगवान आज्ञा गर्ह्य ॥
ब्रह्मरूपि अग्नि ले ड्या को कर्म जोइ सो फेरि ले पडु देन ॥ निर्मल मन भया
पदि फेरि जन्म दु देन ॥ ६ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

राम

॥ २ ॥

अर्जुनविनिगर्धन् हे भगवान् मयोपगपयो पापहो यो सुचिहो यो भुवि
हो भनि हराया पछि येति मन मार ह्या के ह भन्या तस्का कर्म को नासक सो
गरिहो लाहे हरे मन्नाइ आज्ञा गर्ज हव स भनि ॥ अर्जुन ले विनिगर्द भया ॥ ७ ॥

अर्जुन उवाच ॥ मन सा पुण्य पायानि असुचिश्च सुचिन्मथा ॥

एते मनोसि वर्तन्ते कर्म नासक थं हर ॥ श्री भगवान् उवाच

एत सर्व कृतं कर्म कृतं तु त्वत्सममर्थेण ॥ सकल्पश्च विकल्प

श्च नास्ति जन्म न विद्यते ॥ ८ ॥

श्री भगवान् आज्ञा गर्धन् जस्ते स पूर्ण गन्था को कर्म कन ब्रह्माला इत्यर्थ
रागन्था को छ जस्को चित्त मा संकल्प विकल्प यो उवै छैन तस्को फेरि जन्म न
देन ॥ ८ ॥

॥ ग. गी ॥

अर्जुन विनिगर्हन् हे प्रभोधन स्त्रीष्टो ए दाजु भाइ नाना तरुका भोगत
मे सुख एति करे मन माए ला को छ भन्या कर्म ना सक सो गरि होला मलाइ

अर्जुन उवाच ॥ धन दाए सुता वधु नाना भोग सुखानिच ॥ ए
ते मन सिवर्त्त ते कर्म ना ज्ञ कथं हरे ॥ ९ ॥ श्री भगवानुवाच ॥
धन दाए सुखे न गति नेव भोग सुखानिच ॥ भक्तियोगे एति र्य
स्या पुन जन्म न विद्यते ॥ १० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

आज्ञा गर्नु हव सु भनि विनिगर्दा भया ॥ ९ ॥ श्री भगवान आज्ञा गर्दा भया हे
अर्जुन धन दाए रादि को सुख मायनी एति छे म नाना सुख को भोग यनी छे न
भक्तियोग मा एति जस्का छु तस्को फेरि जन्म हुंदे न भनी अर्जुन लाइ कहंदा भ
या ॥ १० ॥

ए. म.

॥ ३ ॥

अर्जुन विंति गर्धन हेहरे मर्त हाति स्वरूप भयाका मन कोट ध्वा चंचल रुंघ
रूपि धाव चल न्या कन पचिस अकृतिले सग भै एया का अहंकार ले पनी सग

अर्जुन उवाच ॥ मनो मातंग रूपस्य तदभा तस्य चला भवेत् ॥ पंच
प्रकृत्य हंकार कर्म नासक थं हरे ॥ ११ ॥ श्री भगवान उवाच ॥ मनो
मातंग रूपस्य ज्ञान संकुश मर्जुन ॥ ब्रह्म ज्ञान एतिर्यस्य पुन जन्म न
विद्यते ॥ १२ ॥

भयाका को कर्म न स कशो गरि होला मला इआ ज्ञा गर्नु हवस ॥ ११ ॥ श्री भग
वान आ ज्ञा गर्धन हे अर्जुन मन हयी भक्त हातिला इ ज्ञान हयी अंकुस लगा
इ ब्रह्म ज्ञान मा एति नि निज स्को छत स्को फेरि जन्म रुंदैन ॥ १२ ॥ ॥

॥ ग.गी ॥

इतिगर्भगीता प्रथमोऽध्यायः ॥१॥ अर्जुनविंतिगच्छन् हे कुरुक्षेत्रसंपूर्णकर्मक्षो
डी सन्यासधारागगया पछि केरि कर्मगया भन्या त्वो कर्मलिष्टुं छकी त्वो

इतिगर्भगीता प्रथमोऽध्यायः ॥१॥ अर्जुन उवाच सर्वक
र्मक्षतनालिसंन्यासयोगधारां पुनः कर्मभवेद्विप्रम
मयुगोत्तस्य का गति ॥१॥ ॥ ॥ ॥ ॥

मया पछि तस्की का गति रुं छेत् ॥१॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

राम

॥ ४ ॥

श्रीभगवान् आज्ञागर्दाभया हे अर्जुन सुतम कहं कु संन्यासजोग धारणाग
रीसक्या पाछे फेरिकर्मगारिलि न्नभयोभन्या फेरि न्नम्य सुभे गर्भवासफे

शीलु लउ वाच ॥ गृहीतो योगसंन्यासे पुन कर्म विलियते ॥ १ ॥
नस्तस्य जरा मृत्यु गर्भवास पुन पुन ॥ २ ॥ अर्जुन वाच ॥ योगे
ये कृतो भ्यास संन्यासे यश्च धारत ॥ वेद्युग्ये भ्रमते तित्ये किं फ
लं तस्य केशव ॥ ३ ॥

हिंछ ॥ २ ॥ अर्जुन विंति गर्दत हे केशव जोगमाज सुले भा रिडा भ्यासगारि
आया को छ संन्यास धनी धारणाग न्या को छ वेद्युग्य मा धनी चारं चार पुं मेदु
मेद रहं छ तस्को फल क्या रुं छ भनि विंति गर्दाभया ॥ ३ ॥ ॥

ग. गी

भगवान् आज्ञागर्भाभया ॥ हे ह्यर्जुन योगको अभ्यासं ते युक्तं भयाका वेद्य
कन गुह्यगत्या को ह्यदा तिर्थादिमा भ्रमणगदियदिता किरो सत्यो आफ्ना

श्री भगवान् उवाच ॥ योगभ्यासे भ्रसे तिर्थ वेद्यं जगत्सुते
यदि उद्धरेत्समगोत्रानि यस्व पुत्रो हि योगविन् ॥ ४ ॥

सातकुलको उद्धारं गच्छन् जस्को हो ऐ योगमा मात्रि पनी जांछु सोयनी
सातकुलको उद्धारं गच्छन् ॥ ४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

राम

॥ ५ ॥

हेअर्जुनवेराजभन्याकोपनिअतिउलभछ तसेयोगधारणपनियोसंसारु
अतिउलभछउस्मन्दापनीयोगकोधारणअतिउर्जभछउस्मापनीस्यह

सीभगवानउवाच॥ उलभंवेववेराजंउलभंयोगधारणं
॥ उलभंब्रह्मज्ञानंच उलभोनिस्सहीनरः॥ ५ ॥

भयाकोमनुष्यताअतिउलभछहेअर्जुनभनिअभगवानलेअर्जुनलाइ
आज्ञागदाभया॥ ५ ॥

॥ ग. गी ॥

अर्जुन विंतिगर्हन् ॥ हेरुध्वजी वेराज्ञ भन्याका क्या हो अथवा य ए नि आंगमा
लगाउ न्या हो कि अथवा तुलसी धारणा गन्या हो कि अथवा संपूर्ण कर्ममा
विरक्त न्या हो कि या हो वेराग्य को लक्षण भनि विंतिगर्द भया ॥ ६ ॥ अथवा

अर्जुन उवाच ॥ की वेराग्यं च भस्मा विरुलसिं शुषणा निच
॥ सर्व कर्म विहक्तिर्वा किं वेराग्यं च लक्षणम् ॥ ६ ॥ श्री भगवा
न उवाच ॥ न वेराग्यं वने वा सो न भस्मा गजप्रमही ॥ न चै
व धर्माभ्या ज्ञानं वेराज्ञ साधनम् ॥ ७ ॥ ॥ ॥

वेराग्य भन्या को वन माजा इव धु हो कि अथवा संपूर्ण ष्ठि विमा वरेव
र धु हो कि वेराग्य भन्या को कस्तो हो आज्ञा हव सुभा नि विगर्द भया ॥ ७ ॥

राम

॥ ६ ॥

१
श्रीभगवान् आत्तागर्नलाग्पाहे अर्जुन मुन वैराग्यको साधन बनमा बह्माले पनि
क्रुदैत आगमा अरुनिलगाडनाले पनि क्रुदैत धर्मकर्ममा विरक्त क्रुनाले पनि क्रु
भाग्यद्वनि वैराग्य भाग्यद्वनि योगवित् ॥ भाग्यद्वैविष्णुभाक्ति
श्रभागा श्रज्ञानवाञ्छेत् ॥ ८ ॥ ॥

दैतकेवल वैराग्यको साधनले ज्ञानको आसंयतिरिक्त अर्काप्रकारले केहिदैत
॥ ८ ॥

ग. गी

नाहापदि. फेरिभगवानआपगदर्शभया 'हे' अर्जुन वैराग्यना. बडाभाग्यले गरि
कनकुंड. ज्ञानवानपनि. बडाभाग्यले गरिकनकुंड. योगसिद्धिपति. भाग्येले कुंड

श्रीभगवाणउवाच ॥ भाग्यभवति वैराग्यं भाग्यं भवति योगवित्

भाग्यवैशुभक्तिश्च भाग्याच्च ज्ञानवानवोत् ॥ ८ ॥ अर्जुनउवाच

॥ ज्ञानस्य किरूपं च कथं ज्ञानविचिंतयेत् ॥ ज्ञानवन्निजानामपि

कथं ज्ञानं च केशव ॥ १० ॥

कविमुकोभक्तिपतिभाग्येलेकुंड. ज्ञानवानपनिभाग्येलेकुंड ॥ ८ ॥ अर्जुन
विजिगर्हन्हे केशव. ज्ञानकोस्वरूपकलोचनो ज्ञानवित्तकनकसारातले
गर्जन्तोकोप्रकारतामजादेन. ज्ञानकलोहआपगर्हहवस्रभतिविजिगदर्शभय

॥ १० ॥

राम

॥ ७ ॥

श्रीभगवान् आगागर्तलागा हे अर्जुन ज्ञानको रूपपनि है न रेखापनि है न त्पो
शिवपनि होइत सक्तिपनि होइत ज्ञान पातालमापनि आकाशमापनि है न मा
श्रीभगवान् उवाच ॥ रूपं त्वरेखान् शिवो न सक्ति अधो न उर्ध्वं न च
स्थूलं शुक्लं ॥ नीरामयं नित्यं निरावलंबं निराश्रयं नित्यं निरंजनं तस्मै ॥ ११ ॥

धिप होइत तलपनि हाइत साधुपात होइत दुलोपनि होइत कस्तोभन्यानिर्मले
पश्चात् अगर्तं नृणां आश्रयकेहि न भयाको निरंजननिर्मलः ज्ञानहृद् हे अर्जुन ॥
॥ ११ ॥

ग. गी

अर्जुन विंतिगर्ह न रहे भगवान् सो ज्ञान न शिबहे न सक्ति हो न सा नुहुलो आश्र
य पनित भया की आकार पनीत भया को आधार ले पनिरहित भया को य सो ज्ञा

श्री अर्जुन उवाच न सक्ति न सिव स्थलेन न लक्ष्म चानिराश्रय निराश्र
य निराकार निराधारं मन स्थिर ॥ १२ ॥ श्री राम श्री भगवान उवाच ॥ य

न माया च बल मन लाइ कला तरु ले स्थिर कसा गरि दुंदुभलाइ आग्या गुनु हव
स भनि अर्जुन ले श्री भगवान का चरणा कमल माय स्नाय कार ले विंतिगर्द भया

॥ १२ ॥

राम

॥ ६ ॥

श्रीभगवान् आगा गच्छन् हे अर्जुन आदर आमु दृष्टि जां ह ता हा सा मन्य
पनि पुच्छ त्पो मन का विच मा व डो शुन्य छ त्पो शुन्य का विच मा मन ल य डु छ

त्रय त्र गता दृष्टि तत्र तत्र गते मन ॥ तस्य मध्ये महा शुन्य शुन्य वध वि
धिय ते ॥ १३ ॥ तत्र यत्र प्रकृतिकं मन स्थिर भवेत् तत्तन्मध्ये लिय
ते शुन्य शुन्य मध्ये मनो विज्ञाते ॥ १४ ॥

॥ १३ ॥ जा हा पंच प्रकृति रहं छ ता हा मरा स्थिर हवस् ते हि मन स्थिर भया पद्धि
मन का मध्य मा मन सुन्य रहोस् ॥ ते हि सुन्य मा मन प्रवेस ग या पद्धि मन ल य डु
छर मन स्थिर डु छ ॥ १४ ॥

॥ ग. गी ॥

इतिगर्भगीताभाषायादितिषोडश्याय ॥ २ ॥ अजन्तविनिगर्ह्य हे केशव
यो तत्त्वनिमित्तमलारकह्यो हे देवजगत्पुरुषो ज्ञाता यो तत्त्वज्ञादे तस्को
गतिकस्तोऽहं सो आज्ञागर्ह्यस्वसंभति अर्जुननिगर्ह्यमया ॥ १ ॥ श्री

इतिगर्भगीतायादितिषोडश्याय ॥ २ ॥ श्री अर्जुन उवाच ॥ इ
दं च कथितं तत्त्वदेवदेवजगत्पुरुषं न जानान्नि ह्यस्मत्त्व
का गतिस्तस्य केशव ॥ १ ॥ श्री भगवानुवाच यकादसि कृता
येन त्रिर्धं भ्रमति यो नरवैराग्यसाधनं तस्य मुक्तो हि पाराउष

भगवान् आज्ञागर्ह्यस्वसंभति अर्जुन निगर्ह्यमया ॥ १ ॥ श्री भगवानुवाच यकादसि कृता
येन त्रिर्धं भ्रमति यो नरवैराग्यसाधनं तस्य मुक्तो हि पाराउष

॥ २ ॥

राम

॥ २ ॥

नीलानहे अर्जुन भनि श्रीभगवानले अर्जुन लाइ आज्ञा गर्दा भया ॥ २ ॥ फेरि
श्रीभगवान आज्ञा गर्छ हे अर्जुन जो मुखमा हरिको स्मरणमा तत्पर हुन्छ स

हरिस्मृति परम सुसत्यवादी सदा सुवि ॥ मिथ्यावादा दीरहित सैव
मुक्तो हि सा एव पूजामंजय ध्याति गीतामृतयकेन्द्र ॥ मयि श्री
तीः कृता येन सब मुक्तो दीपा एव ॥ ४ ॥ ॥ ॥ ॥

त्यबोलन्या सदा सर्वदा सुवि भैरहन्मा मिथ्यावादा लेरहित भया के जो छः सहि सु
क्तुं छ ॥ ३ ॥ हे अर्जुन जसलेता मनमा प्रीति राखि पूजा जप ध्यान गर्छ गीतारूपि
अमृत मा पाठ गर्छ जो छ सो हि मुक्त हुन्छ भनि जान हे अर्जुन भनि श्रीभगवान

॥ ग. गी ॥

आज्ञागर्दभया ॥ ४ ॥ हे अर्जुन जोता गुरुमाभयो. श्रेष्ठजनमाभयो. ब्राह्मणमा
भयो. मानापीतामाभयो. अतिथिकोपजागर्ग्याभयो. यस्तो जोह. त्यो मु
भक्तिजात हे पाराडव ॥ ५ ॥ हे अर्जुन जसले नादयाले धर्मने गरि पुजागर्ग्याको

पुरो भक्तिहि जो भक्तिमाता पित्रो सत्यैव च ॥ अतिथि पूजयेद्य

सुखं मुक्ते हे पाराडव ॥ ५ ॥ येना विता दया धर्म सत्य सतोष

सर्वदा ॥ सना सर्व प्रकारेण सैव मुक्ते हे पाराडव ॥ ६ ॥ ॥

छ. सत्यलेख. संत्वणले सदा सर्वदा युक्त भयाको. सर्व प्रकारले यस्को सबैय
स प्रकार सितव्या प्रभयाको जोह. सोहि. सो मुक्त हुन्छ ॥ ६ ॥ हे अर्जुन. कामभ
यो. क्रोधभयो. इत्यादि कन सदा जसले. त्यागगर्ग्याको हसदा सबदा देखि नि

राम

॥ १० ॥

दुनिभयाकोछ बिजजबको सवै विषय देखि निस्पृह भै स्थिर भयाकोछ मनन
स्का मुक्तहुन्छ ॥ ७ ॥ हे अर्जुन भनि भगवान आग्यागर्दा भया ॥ राग हे जिति सदा सर्व
राजसुले गुरु का भक्ति मा तत्पर वसुख को भयन भया को जो छ सोहि मुक्त हुन्छ भनि
काम क्रोध परि त्यागि विषय निस्पृहः सदा मनो धैर्य सदा विरये वं मुक्तो हे
पाराडव ॥ ८ ॥ राग द्वेष जितो येन गुरु भक्ति रत सदा सुखेऽः खं भये ता स्मि ए
व मुक्तो हे पाडव ॥ ९ ॥ अर्जुन उक्क कथं देह त वा सो कथं देह त व प्रियः ॥ अ
यं मे संशयो दिर्घ ब्रूहि मे पुरुषोत्तम ॥ १० ॥

भगवान ले आता भयो ॥ ८ ॥ अर्जुन कहं कुरु हे देव हे केशव कस्तो देह मा तिजो वा स
ह कस्तो देह मा ह कस्तो देह तिजो पिचारो छ सवि संदेह मे ए म न मा दिर्घ भै र
ह्यो को छ हे पुरुषोत्तम ॥ ११ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

ग. गी

मलाइ आना गुह्रस ॥ यति अर्जुन ले विनिगया श्री भगवान आना गुलाया
॥ ८ ॥ हे अर्जुन जस्का सरि मातुल शिको पत्र लगाया को छ मेरा भक्ति मा सदा सर्वदा
रत भया को छ इडिय लाइ जस ले जिन्या को छ हे अर्जुन म सदा सर्वदा नाहार हंहु

न प्रियो तिर्थ वासे न प्रिय अ पडितः न मे प्रियो जप ध्यान मद्रक्त सच
मे प्रीय ॥ १० ॥ न मे प्रियो धन श्रेष्ठो न मे प्रियो जिघासक न मे प्रिय
बहुन्यो व मद्रक्त स न मे प्रिया ॥ ११ ॥ न मे प्रिय स्मार्थ वासी वन वासी

तिर्थ मा वास गर्न्या पनि मेरो पिमारे ऊ दे न पडित पनि मेरो ऊ दे न जप ध्यान गर्त्य
पनि मेरो पियारो ऊ दे न जस ले मेरो भक्ती गर्द सोहि मेरा पियारो भनि जान ॥ १० ॥

राम

॥ ११ ॥

हे अर्जुन सुन धन लेवडा भया को पति मेरो पियारो ऊदैत हिंसा गर्न्या पति मेरो पिया
रो छैन ठेरे संग लडा जिगर्न्या पति मेरो ना केवल भक्ति गर्न्या मात्र ऊंछ ॥ ११ ॥

न मे प्रियामद्रक्त सव मे प्रिया ॥ न मे प्रियो कृत यज्ञो न मे प्रिय सुपंडित
न मे प्रियो वदु तेख मद्रक्त सव मे प्रिय ॥ १३ ॥ न मे प्रियो वदु बुद्धि कवि शूर
अन प्रिय ॥ न मे प्रियो धन राज मद्रक्त सव मे प्रिय ॥ १४ ॥ ॥ ॥

तिर्थ मा वास गर्न्या वन मा वास गर्न्या पति मेरो पियारो ऊदैत पूजा को आरंभ गर्न्या
पति मेरो पियारो ऊदैत केवल मेरो भक्ति गर्न्या मात्र मेरो पियारो ऊंछ ॥ १२ ॥ हे अ
र्जुन यज्ञ गर्न्या पति वडिया पंडित पति ठेरे भेष धार्म्या पति मेरा पियारो छैन के
वल एक चिन्त ले मेरो भक्ति गर्न्या जो छ सो हि मेरो पियारो होला भनि भगवान ले

॥ ग. गी ॥ अर्जुन ह्लादभासागर्दभया ॥ १३ ॥ इति भाषाया तृतीय ॥ ॥ अर्जुन विंतिग
 नलाग्पाहे भगवान् निम्नाभक्त हुरुचक्रैः पियारो रखा छं नभ्याति भक्तिह
 इति गर्भगातायां तृतीयोऽध्यायः ॥ ॥ ओ मेरो भक्तः स संतोषीय
 दिशिदिय निग्रहः मानापमानयोस्तुत्यास्तु संभोगेन वां हति
 ॥ २ ॥

ह्लादक साधकार सितजानि सकुंभनिभत्याः श्री भगवान् भाग्पागर्तला
 ग्पाहे अर्जुन जो मेरो भक्त ह सो ला अति सत्व वद इदिय वशगत्याकार अप
 मानमान इदु वैवरो वर भयाकावठी या भोग हुरु कोइ हात भयाको जोइ
 सोहि मेरो भक्त जान ॥ २ ॥

राम
 ॥ १२ ॥

हे अर्जुन केहि काममा. कामको पति. इच्छा. सबै कराये सिन जात्या. सहजाने नद कन
कन या इराये न्या भेद पति न भया को जो छ. सोही मेरा भक्त भनि भे. बाग नले

नीरा मिनि स्पृहा तित्ये कार्य भोग न बाछति ॥ सहजाने नद संपे न्रो
भदा भे दो विन जिना ॥ ३ ॥ नमेशु तं मित्रा शिह. पोह्या विवर्जिता
काम क्रोधा दिरहित संसभ भक्तो यम अजुन ॥ ४ ॥

अर्जुन लाइ आग पाग दा भयो. हे अर्जुन रुक चित्त गरि सुन. मेरा शत्रु पति छैन
मित्र पति छैन के रिलि न्या वसु पति केहि छैन छोड न्या वसु पति केहि छैन भ
निजान्या काम क्रोधा दिलो भमो हान सर्मल रहित भया को जो छ. सोही मे
रो भक्ति हो भनि जान. हे अर्जुन ॥ ४ ॥ हे अजुन मेरा भक्त का मुख मा पति इच्छा

॥ ग. गी ॥

रहदेन धनमायनी रहदेन स्त्रीमायनी इच्छारहदेन पुण्यमायनी पापमायनी
इच्छारहदेन कनिकरु मुक्तिमायनी इच्छारहदेन ॥ ५ ॥ अर्जुन विन्निगर्धन हे

न मे भक्तो सुखे वा हति ॥ न चांछा पुण्य पापाना मुक्ते वा हति नो
र्जुन ॥ ५ ॥ श्री भगवान उवाच ॥ जीवन मुक्तो हि मे भक्त कंठे तुलसि
भूषणो न तस्य कर्म न लिप्यति य प्रपन्नो दकयथो ॥ ६ ॥ ॥ ॥

भगवान् नित्य हनुना को कारणा जानी हो की अथवा धनो सित हो की बंधु
सित हो की अथवा भोग्य सित हो की सुख सित हो की क्या कर्म सित हो सो
आज्ञा गर्तु हवस् भनी अर्जुन ले श्री भगवान् सित विन्निगर्द भया ॥ ६ ॥

॥ राम ॥

॥ १३ ॥

हे अर्जुन गला मूलसि को मालाधार गान्धाको दंदा मेरो भक्त जीव मुक्त
होते मुले केहि कर्म गान्धा यनी तिकर्म कोले पुरुदेन कमल काया तमा रूपा

श्री भगवान् उवाच ॥ एक भावें यदा वेत्ति तदा कर्म न लिप्य
ते ॥ तेन कर्म न लिप्येता यत्र यत्रोदकं यथा ॥ ७ ॥ एक भावें य
दा वेत्ति तेन कर्म न लिप्यते ॥ कर्म कर्म क्रियानामि विश्वं का
लो वशी कृत ॥ ८ ॥

कोपानी जाहि रूद भनी जान ॥ ७ ॥ हे अर्जुन एक भाव कन यायो तव ते स
लाइ कर्म लिप्य पुरुदेन जसे यानी मारुखा का कमल काया तमा यानी स
ग ले पुरुदेन तसे जानी ले गान्धा का कर्म कोले पुरुदेन भनि जान ॥ ८ ॥

॥ ग. गा. ॥

हे अर्जुन जब एके भाव जात्यो. तब ते सलाइ लाइ करन ग्या का कर्म काले प
हुंदेन. त्यो जानी को कर्म पनी छैन. अ कर्म पनी छैन. क्रिया पनी छैन जस्का
न सले विश्व धरि. काल पनी न श्यछ ॥८॥ चतुर्थो अध्याय. हे अर्जुन वसग

यस्याचिन्ताहसैतित्यंतस्यकिंक्रियतेयाम गर्भेनाहि
समेभक्त. समर्थो. हंतं ध्यार्जुन ॥९॥ ॥ ॥

या कोछ भनी जान जस्को ता हरि भा. सदा सर्वदा. चित दी एव्या कोछ. ते स
लाइ यस ए ज ले पनी क्या गत स कै न न. ते लामे रा भक्त ना गर्भ मा पनी वा
सगर्दन. जस्ते म स मर्थ छु तस्ते. त्यो भक्त पनी. समर्थो छ भनी जान ॥९॥

एम

॥१४॥

हे अर्जुन सुन जसै जल का विचमा . कमल रखा को हत पनि . त्यो कमल ले . लेप
हुदै न त सै संसार मार खा को भक्त हत पनि . संसारि धर्म मालि झुट्टे न ॥ २ ॥

श्री भगवानुवाच जल मध्ये यथा पद्म जले पद्म न लिप्यते .
संसारेषु स्थितो भक्त संसारे न हिलिप्यते ॥ यश्च ज्ञाने . रतो
ज्ञानि संसारं न कांक्षति ॥ ज्ञानि ज्ञानेन मुमुक्षो सो संसारं
न कांक्षति ॥ ३ ॥

जौ न ज्ञानि ज्ञानि रत भया को ह सो न संसार मार खा को हत पनि . संसार के
इछा गदै न त्यो ज्ञानि केवल ज्ञाने ले मुक्त को ह दो वंध झुट्ट भनि ज्ञान भ
नि भगवान ले अर्जुन ले इ कह्य भया ॥ ३ ॥

॥ ग. गी ॥ अर्जुन विंति गर्हन् ॥ हे भगवान् तानि हरन्ता अवक्षकोपनि भोजनं गर्हन् अ
कर्मपनिपतिं गर्हन् बारंवारं असुविभया का शुचिकैलेपनि रुदेन तस्माज्जानिक
सो गच्छिक्तुं हन् ॥ ३ ॥ श्री भगवान् आत्तागर्तलाग्वा हे अर्जुन ब्रह्मज्ञानमासदास

अर्जुन उवाच ॥ ब्रह्मज्ञाने सदा लीनः स्वद्वंद्वो ज्ञान इश्वर ॥ अभक्षं भक्ष
ने जनियधारौ पङ्कतासन ॥ ३ ॥ ब्रह्मज्ञाना मृतस्वाद अज्ञानविषव
धने ॥ ब्रह्मज्ञानं मृतस्वाद करोतु यदी किं यो ॥ ४ ॥

ब्रह्मालिन भैरव्या का इश्वर ले सवैला इ अभक्षको भक्षामोरो स्तापनि अभक्षको दो
य छैन जस्को वनमाको अग्नि जस्ते पवित्र हतसै तपो ज्ञानिपति पवित्रै ह भति जान
हे अर्जुन भति श्री भगवान् आग्वा गदा भया ॥ ४ ॥

राम

॥ १५ ॥

हेअर्जुन ब्रह्मज्ञानांशुता जो हो सो अमृत का सो दहो ब्रह्म कन जा न्याता विच हो तेहि वं
धन कहउछ ब्रह्मज्ञान रूपि अमृत को स्वाद पाठ्या जोछ सो ता पाप कलेस कन नास
गछ न भनि जान भनि आगा गर्भ भया ॥ ६ ॥ हेअर्जुन जसो हतार भारि काथ को थुओ
भया पनि रुके क्षण आग लेना शगछ न ले ब्रह्मज्ञान पाया पछि सबे पाप को क्लेस नाश
काय भार सह स्याणि क्षणा दहति पावके ॥ तथा दहति पापानी ब्रह्मज्ञा
न समा चोत् ॥ ६ ॥ अर्जुन उवाच मन चंचल ताय स्पयेन चेदियति ग्रह ॥ क
र्मा कर्म कृतं नासि कालो बधु पंचनिग्रह ॥ ७ ॥

गछ न भनि जाना भनि श्री भगवान का चरणामा अर्जुन फेरि विनिगछ न हे कृष्ण जसके
मन चंचल छ तस्कां इदिय कन कयाव स्पुन हे कृष्ण कर्म पनि अकाम पनि दुवैन गर्सी
ले पाप कन के सागरि वस पर्ला भनि अर्जुन विनिगछ न ॥ ७ ॥

॥ ग. गी ॥ श्रीभगवान् आत्मा गर्हन् हे अर्जुन सुत गुरुका चरणामा मन लगाइ तत्त्व को अ
भ्यास लेति गुरुंछु कर्म पनी अकर्म पनी गन्ना को छैन भन्ना तस्को काल सह
जे वश हुंछु भनी जान ॥ ८ ॥ श्रीभगवान् आत्मा गर्हन् लाग्या हे अर्जुन जो मनुष्य

श्रीभगवान् उवाच ॥ ब्रह्म स्व हर ते यश्च ब्रह्म हत्या क
रोति य ॥ स न पापेन चा प्रोति गर्भ मृत्युं व वालक ५
ति पंचमोऽध्याय ॥ ५ ॥

ले ब्रह्म स्व कन हरण गर्हन् जो ता ब्रह्म हत्या गर्हन् तेहि पाप ले गर्भ वा सुवारं
वार वाल के अवस्था मा मर्ह ॥ १ ॥ हे पाथि कि सुन देवता को गुरु को प्रजापति
को क्रिया न वेद को ब्राह्मण हरु को निन्द जो गर्ह तेहि पाप ले फेरि जिम्मा हु हाग्ना

राम

॥ १६ ॥

मसुकरको जन्म कुंछे हे पार्थिव ब्राह्मणा का कुलमा जन्म भै कनवे दत्त पदुत्ता सुधि
पनि नगर्मा क्षत्रिय का कुलमा जन्म कनपुद्गु नगर्मा वैरि लाइ देवता उराउ न्या ते सा
पाप ले जुक्त भया को जो छु फेरि जन्म दुदा स्यात् भै कन जन्म पाउछु भनि भगवान

यति नैर्दिय ग्राहि राग द्वेष करोति ये ॥ तेन पापेन मो पार्थ भनु भवत्य
धामुख ॥ ५ ॥ गोत्र बंध कृता येन गोत्र नास्ति उ स्विता तेन पापेन विध

ले अर्जुन कन आजा गर्दा भया ॥ ४ ॥ फेरि आजा गर्न लाग्या हे अर्जुन अति स्वरूप
धारिक न जो इन्द्रिय को तिग्रह गर्न सकतैन राग पनि गर्छु देव पनि गर्छु ते सार्व
पले जन्म दुदा भवो मुख भै कन जन्म पाउछु मुक्त दुःख पर्ना लाइ जन्म पाउनु तेहि पा

॥ गंगा ॥ पहे भानि जान ॥ हे अर्जुन सुत नारि भै कन आ फनु पुरुष लाइ को डि पराइ का प
रुष सिन प्रिति गर्ह ते स्ता पाप लेगारि कन अ को जन्म मा विधवा वारं वार भै कन व
वा जन्मा भवति वागार ॥ ६ ॥ कन दिये ते दन वत कारि न पंडिता ते न पावे
न हे पार्थ गर्भ मृत्यु मथा पुयात् ॥ ७ ॥ ॥ ॥ ॥

ऊनै उष पडछ ॥ ६ ॥ हे अर्जुन जस लेता गोत्र हत्या गर्भा को ह आ प्र गोत्र की स्त्री
कन पुरुष दिछ निउ वे पाप लेउ वे स्त्री पुरुष लाइ वा नर को जन्म ह भनि जान स्त्री ल
इ जन्म भनि विधवा होला ॥ हे अर्जुन जस ले दान दि द श्रुति या भाव ले दिछ न पंडि
त न भै कन न जाति अ काला इ पंडित हे वना दि कन गर उछ ते हि पाप ले गर्भ म

॥ ७ ॥
राम
॥ १७ ॥

हे पार्थ ब्रह्मण्यैकन आसारनगर्भवेदनपह्या हरिभाक्तिनगत्यावाह्यगाल्ना
इपदि राशिअपमानगर्भा ज्यो मनुष्यत्वाइ प्रेतकोजन्यपाउद्धरहे अर्जुन तस
लाइ संत्वय पनि छैन मा पापनि छैन दया पनि छैन आचार पनि क्रिया कर्म

दिज आचारही तस्यान वेदाभ्यास विवर्जती हरिभाक्तिरतो नैव प्रं
ता भवति सदिज ॥८॥ सतो योन दया धर्म नाचारे न क्रिया शुचि
॥ पाप बुद्धिर न प्राप्ति स प्रेतो भवति कुर्व ॥९॥

पनि छैन सदा असुचि भयाको पाप बुद्धि भयाका प्राप्ति हर मया पदि प्रेतको
योति पाउछ ॥१०॥ हे अर्जुन जो मिथ्या दुष्टो बोल्छ हर्क मापराइ लाइ माई दुटे

॥ ग. गी ॥

अर्का के निडा गच्छ सोहि प्राप्ति ले स्वर्ग मारखा का प्रिति लाइ माई भनि जान ॥ हे
अर्जुन जस ले घर कि माली क भया कि स्त्री जो छ सोहि दान दिनु जो प भया का

मिथ्या वाद च यो ब्रते मिथ्या च परान क ॥ मिथ्या न क तसे ह्य न स्वर्ग
स्वापी द्यात क ॥ १० ॥ गृहीणी प्रददात्य संदात क्य व ह्य रो थिनि नत्
पापे न भवे ह्य भ्रातृ भाय पु न दन ॥ ११ ॥ प्रतिव्रता कुमायो अ व ह्य
राग गुरु यो मिना ॥ मित्र ना य प्र संगे न नर के व सति कु व ॥ १२ ॥ ॥

॥ राम ॥

॥ १० ॥

प्राप्ति राह रू लाइ अ न दान ग न स कै न तेहि पाप ले विध बाह व स अर्का ले यो वाये
विस्वास हो भनि ग या को वात जो हो तेहि वात परा इ लाइ जो के ह ह सो म नु व्य ह रू ला
इ जा हा सं म चं ड सु र ह रू ला हा सं म नर के मा वा स ग ह न भ नि जा न भ नि भ ग वा न ले
अज्ञा ग न्या ॥ १२ ॥

हे अर्जुन जसले प्रतिवृत्ता स्वास्ति जो भन भया कि कुमारी गुरु के स्त्री लाइया
होगी हल्लाइ जो पुरुषले हरगगर्ह सो हि पुरुष नर के मावास गर्ह ॥१३॥

येना ॥ नावनदग्धा दृष्टायेत नरक्षितं ॥ तत्पापेन भक्तुस्त्व
नरके वससति भुवं ॥१३॥ गुरुविप्र नृपं हति यश्च नारितः
पश्चिन ॥ तस्य स्वर्गो न वेदास्ति यावच्च इति वाक्ये ॥१४॥

हे अर्जुन जो पुरुषले परइकी नारिलाइ इति गर्ह परइको धन हरगगर्ह
सदा सर्वदा अर्के को निका मात्रे गर्ह तस्य पुरुषलाइ युग युग नर के मास गर्ह
न ॥१४॥

॥ ग. ग. ॥

हे प्रजुन ॥ जसले वनमा ड्यालो लगाइ ड्यालो लगाइ नतयार भयाको मानी
सजाइ देसी कन नरोकी चप लागी रहत्या तिहुँले जनाम न्या घछिन केँ मार्व

अर्जुन ॥ आत्मने जीवनस्यार्थे मिथ्या च परान्तक यना
एकष्टन जातिकथं मुक्तो जनार्दन ॥ १८ ॥

मग छ भनी जान गुरुको देखगन्या राजाको देखगन्या तपस्वीको देखगर
न्या ब्राह्मण गुरुको देखगन्या मनुष्य गुरुको देखगन्या तिसदा सर्वदा राक्षस
भैरु छन ॥ हे प्रजुन गुरु कन ब्राह्मण कन ॥ १८ ॥

राम

॥ १८ ॥

॥

॥

राजा लाइ तपस्वी हरु लाइ जो मनुष्य प्राणालिछ सोहि मनुष्यता स्वर्ग जाहासं
म चरु सुख रहु छैन ताहासं स्तर्ग कदाचित् हुंदे न भाने जान भनि श्री भग
वान ले अर्जुन लाइ साजा गद्दी भया अर्जुन विनिगर्छु न हे भगवान आक न
जीय को निमित्त हुंदे गरि अर्का लाइ मारि न राखन्या अर्का को सुख यनिन

आत्मार्थ च विनार्थ च परस्य प्राण घाटकः ॥ तथा येन
भवेत् सुखी क्षमिर्भवन्निबो न ॥ १९ ॥ कलधर्मपरित्यागी

दस न्या एसा प्राणी हरु कस्तारि तले मुक्त हुंछ सो जा जामलाइ गर्नु हव सुभनी
अर्जुन ले श्री भगवान का चरण मा विनिगद्दी भया हे अर्जुन सुन जो प्राणी भेक
न आक्राजि विनिमित्त अर्का को प्राण घाटगर्छ तेहि पाप ले इच्छा न भेक न
कि ए को जन्म पाउछ भनी जान ॥ १९ ॥

॥ ग. गी ॥ — आकर कुलधर्म छोड़ि अधर्म मानो चित्त लाउछ ते सत्तालाइ स्वर्ग के लेय नीरुदेन
इव्य देउला भनी अर्का लाइ छोटै रुखा दिया कायाय ले तो सदा सर्वदा नर के मा

कुलधर्म परित्यागि अकर्म करुते यदि ॥ स्वर्ग नैव भवति तस्य
एयो येन मायि च ॥ २० ॥ अधर्म चाप्यनाचारधर्मश्च तिलो
बुजेत् ॥ अधर्मगारहि स्वर्ग पशु यो नो भुवं भवत् ॥ २१ ॥ ॥

वास गयी को योग्य छ हे भर्जुन भनी भगवानले आज्ञा गर्दी भया ॥ २० ॥ हे भर्जु
न अधर्म ले भयो अनाचार ले भयो गीधर्म ले चलि जा छुताहि अधर्म का फल ले
गरि ते सत्तालाइ स्वर्ग के ले रुदेन पशु यो नीम गति श्रय दुछ भनी जान ॥ २१ ॥ ॥

राम

॥ २० ॥

विष्णु भंदा अंकी कोहि देवता छेन गंगा भंदा अंकी तदि कोहि छेन ब्राह्मण भंदा जान अंकी
कोहि छेन भनि जान भक्ति मावडा विष्णु भक्ति भंदा अंकी कोहि छेन ॥ २२ ॥ तिर्थ माग
या को पुरा परोवर अरु ठाड माहु देन भनि जान गुरु लाइ दान दिया को वरोवर अरु

नान्य तु त्यतिर्थ वा सो दान तिल तर्पण ॥ न च तु त्या प्रतिव्रतानन्यो न जान
वान्नर ॥ २२ ॥ न तु त्या क्षत्रिय भूत तु त्या संन्यवा दिक नैव तु त्या रा
मनाम नैव नैका दशा व्रत ॥ २३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अरु लाइ दिया कोहु देन प्रतिव्रता स्त्री सगरा सिगर्तु वरोवर अरु स्त्री सगर्तु छेन
लानि मनुष्य वरोवर सामान्य मनुष्य अरु छेन ॥ २३ ॥ इति अष्ट ॥ संग्रामना
क्षत्रिय वरोवर अरु छेन सत्य वचन बोले त्या वरोवर मनुष्य अरु छेन

॥ ग जी ॥

उत्तमजातिमात्रा लक्षणवरो वर्ज्यको कोहि छे न भनि जान भनि श्री भगवानले
जागर्न लाग्या ॥ २४ ॥ अर्जुन विनिगन लाग्या हे भगवान प्रभो व्यापक यदि
तातिमि होयो धर्मयो अधर्म कस्मिन्नकारले उत्पन्न हुन्छ तसे व्यापक मा सो क
र्मयो अकर्मको साफल्यो अकर्मको फल हो भनी जान्या देखी श्री भगवान त आर्जु

इति श्रुत्वा ॥ श्री भगवान ॥ अयुक्तं कियते कर्म संकल्पादितिर
ताम ॥ देवलोकमनुव्याणां न गच्छति तथार्जुन ॥ १ ॥

गर्न लाग्या हे अर्जुन मला इजानि कनस कल्पादिगारि विस्तार विधि ले गरि जो
कर्म गर्छ तिमनु व्यहृह न्यौ कर्म ले गरि कन देवलोक मा मला इजानी कन ग
या का कर्म हुं पुग्दैन ॥ २ ॥ हे अर्जुन ब्रह्मापनी कर्म ले गरि देवता का प्रज्य मान भया
हलियनी कर्म ले गरि लक्ष्मी लाइयो या कर्म का बल ले महा देव ले विश्रवाया

॥ राम ॥

॥ २५ ॥

कर्मैछैनभन्यावा कर्मतासाचोहोभनीजान ॥ ॥ हेअर्जुनसीतायनीकर्म
कावशलेहरिहरेइन् कर्मैलेचन्द्रमायनिवडदेसिंछन् कर्मैलेरामचंद्रवनवास
जानुपयो तसर्थ कर्मैछैनभन्यावातहोइन् कर्मजसोवलवानअर्कोकेहिछैन

ब्रह्मकर्मैद्रवदेवा कर्मलक्ष्मिलभेहरि ॥ कर्मरुद्राविषयाप्रान्ति कर्म
नास्तिनवाजुन ॥ ॥ कर्मशाचवलिर्वद्ध कर्मशोरवशोहत् ॥ वा
इवानावनेवासोकर्मनास्तिनवाजुन ॥ ॥ कर्मशोचंगतिप्रान्तिक
मशोवहिलियते ॥ कर्मशोवलुबुद्धिस्यात्कर्मनास्तिनवाजुन ॥ ५ ॥

भनिजान ॥ ४ ॥ हेअर्जुनकर्मकावसलेगारिकन वलिराजापनिवांविषया पातालमा
जानुपयो कर्मैलेगारिकनरावरापनि रामचंद्रकाहातवारमारियो कर्मैलेगारि
पांडवहुरुलाइतनवासगर्तुपयो तसर्थ हेअर्जुनकर्मैछैनभन्यावाजैहाइतकर्म

॥ ५ ॥
कर्मनास्तिजान ॥ ५ ॥

॥ गणी ॥

हे अर्जुन कर्मलेगारि उन्नम गति कुंड कर्मनेगारि कर्मकोले पकुंड कर्मलेगारि विठिया बुद्धि कुंड कर्म
महत्तम न्यावाट होइ न कर्मनाछ भनि जान हे अर्जुन ॥ ६ ॥ कर्मलेगारि सात्पादिको लाभ
कुंड स्त्रीलाभ पनि कर्मले पाउछ कर्मलेगारि वडो श्रोत्रिय पनि कुंड तसर्थ कर्म भनि

कर्मनाल भयते राज्ञ कर्मशो वहि द्योपिता कर्मना सो तृहत्वि कर्मना शि
न वार्जुन ॥ ६ ॥ ललाटे लिखितं यत्र कर्म भवति नाग्रथा मुखं पुरं
भयसोकं अग्रं धावति धावान् ॥ ७ ॥

जान ॥ ७ ॥ हे अर्जुन सुनललाटमाले यदि याको कर्म जोह सो अवश्य कुंड तस्य देवि
पतिरिक्तं भोक्तो केहि पाइदैन मुख पुरं भयो सो क आधिवाटे भउछ भनि जान ॥ ८ ॥

॥ राम ॥

॥ २३ ॥

हे अर्जुन ॥ देवता हरु कन मनुष्य हरु कन मनमाशील स्वभाव भया कामुनि गंधर्व या गिर
ह कन इ स वैता ई आनरा पूर्व जन्म का कर्म हरि सुषड खल वधिया का हन पूर्व कर्म

पूर्व कर्म सुष वधा सर्वदा पांडु नंदन देव लोक मनुष्या अमुनि वध
वयोगिन ॥ ८ ॥ पुषे वंधन था पार्थ अथा क्षीरेंधन नर संसय चे
वदे हे पुष सादं कुरु ते सदा ॥ १० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

स वै का वस मा ह भनि जान हे अर्जुन ॥ ९ ॥ ज स्ने फल म सु गंध सदा सर्व दार ह ह
त स्ने इ द मा धि उ य्या को ह त स्ने नर ह ले स वै मा कर्म र द्या को ह भनि जान भनि
श्री भगवान ले अर्जुन ला श आता गया ॥ १० ॥ ॥ ॥

॥ गगी ॥

ताहापदि अर्जुनविनिगर्नलाग्वाहेभूमजी चौराशिलथयोनिभयाकर्जीवजातिहू
लेयोत्रिभुवनधर्कीरायाकोछतिसवैजविजातिसवैजंजुमाआत्माभत्यायकेश ताप
निकर्मस्वभावभिन्नभिन्नभयाकोक्याकारशालेही सोहिकारामलाइआज्ञागनुहव

अर्जुनचगुशीतिलक्षेष्टव्याप्तिहिभुवनत्रय ॥ एकात्मासर्वदेहेभुप्र
कृतेभिन्नताकथं ॥ ११ ॥ भगवान् कर्मसोभावोदेहेस्पर्सवप्रकृतिभिन्न
ता ममभक्तिस्वभावोयपत्नपत्रोदकयथा ॥ १२ ॥ ॥ ॥

स्रभनिभगवात्सितविंतिगदीभया ॥ हेभगवान् आत्मागदीभया ॥ हेअजुन एकवि
त्तगारिनुन ॥ दोदेवता केवलआत्मापुर्वजन्मकाकर्मकास्वभावलेगरिक ॥ ॥

राम

॥ २३ ॥

नउत्पन्नभयाकोहोतैसेकारणालेदेहपनिभिन्नस्वभावपनिभिन्नकृतजाछ उप्राम
माभक्तिरहन्वास्वभावभयाकोनउत्पन्नहुरुता कमलकापातमारहाकोपानिवरो
वरभयाकोप्रतिप्रभैरहहुननितान ॥१२॥ हेअर्जुनब्रह्मताकेवलसुमनभयाको

निर्मलनिर्गुणब्रह्मदेवदेजलवद्वेत् ॥ निर्गुणादेवसगुरोमल
मेकोविशिष्यते ॥ १४ ॥ यथा मेघजलहृदिजलउत्पन्नातेधरे ॥ त
थाविष्णुसमुत्पन्नभृशुभोपदुनंदन ॥ १५ ॥ ॥ ॥ ॥

अतिनिर्मलशुद्धहुनसैमेघकाविचमारहाकोजलकोउपमाभयाकोधारमाजले
ल्याइकनमिठोगारिमेघकोउदतसैनिर्मलगुणादेविब्रह्मदेविसगुणब्रह्महुनतेहि
सगुणादेविसंसाहुपरसुसवैमलकारणानाएकेहुतापनिकारणानिन्नहुतापनि

॥ ग. गी ॥ भिन्नदेविष्टमभिज्ञान हे अर्जुन तस्मै मे द्यदेवि पानि पदं ते हि जलदेवि पृथिवीमा संसा
रकोष्ठमप्यनुरुद्ध ॥ १५ ॥ हे अर्जुन ब्रह्मभन्याकोना अतिनिर्मल तस्मै अतिसुदुभया
अर्जुन ॥ निर्मलं निर्गुणं शुद्धं प्रवक्ष्यामि सगुणं भवेत् ॥ केन वा बंधनं जा
तिरिदं ब्रूहि न माह नं ॥ १६ ॥ भवानौवाच परात्मा बंधनं जातं जीवात्मा क
र्म बंधनं पश्यात्मानिर्गुणं सनातिकर्म फले स्पृहा ॥ १७ ॥ ॥ ॥

कोष्ठमिति कहिया कोष्ठ तस्य गुण ब्रह्मरुद्ध तपो ब्राह्मणाला इत्यादि पशुन पाइं रुद्र
व्यक्त सो आतागल हवस भनि अर्जुन ते भगवानका चरणा कर्म लमा विनि गच्छात् अ
र्जुन का एसा वचन श्री भगवान आतागर्द भयाह अर्जुन पर आत्मा जो छत् निज्ञान

॥ राम ॥

॥ २४ ॥

नेप करिंछ ॥ ॥ जीवात्मा ताकर्मलिपि किंछ ताहा जीवात्मा परमात्मा को विवर्तिगुणा
नभया को जो परमात्मा गुणाले सहित भया को छ सो जीवात्मा हो भनी जानहे अर्जुन
निर्गुण भया का परमात्मा कत कर्म का फल को इहारे देन हर भया क भयाप

परात्मनि तत्त्वो न जानै इखन सुखा तीच ॥ न काले न भय न मृत्यु परमा
त्मनि चर्जुन ॥ ५८ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

निपरमात्मा विवेक देन हे अर्जुन तिमि जात भनि श्री भगवान ले आज्ञा गया हे अ
र्जुन परमात्मा लाइ जा देन दुरवपनि सुखपनि दुःख देन ते सत्ताइ काल कृत भयपनि रह
मृत कृत भयपनि रह देन परमात्मा लाइ जानि विवित्र के तिछ दाख दे रह देन भनि ज

॥ गंगा ॥

न ॥ १८ ॥ हे श्रुतिजीवभया को नाना तरह को भयरा को उपाज न पनि गछ सुवे
कर्म जो छ भू सत्ते गरिक म बांधिया का छ न ज के क हा ष छ निर्गु रा ब्र ह्म ना स प
रा वि भ कार रा छ न भया का भ्र मा डिले रहि भया को छ छ भ नि जा न हे श्रु न ॥ १८ ॥

नाना क मा रि छ रु ते ना ना भ्र म मु पा र्ज ति ॥ अ ने न व ध्य ते जी

वो निर्गु रा गो नि भ्र मो भ वे त् ॥ २० ॥

पु ष प ति के व ल म ने ले आ र्ज न दु छ ध न प ति के व ल म ने ले आ र्ज न दु छ पा प प ति के
व ल म ने ले आ र्ज न छ स् ति रा पा नि म ने ले आ र्ज छ भ नि जा ज न श्री भ ग वा न ले अ
र्ज न ला इ पा ता ग दा न या ॥ २० ॥

॥ राम ॥

॥ २५ ॥

हे अर्जुन एकचित्तगारि सुत तपो मनस्थिरता धैर्य को आश्रय गती लेक नहुँ छ
धैर्य न भयो ता मन सदा सर्वदा चंचलै रुह तस्काणाले धैर्य को आश्रय गारि

मन भुम भवे दैर्या दधैर्य बल पजुन ॥ मन सैव स्थिरं कृत्या ब्रह्म
ज्ञानेन यत्न ॥ २१ ॥ दुःख सो कन कर्त्तव्यो लोभ मोह कदा च न ॥ सप्तम ॥ ॥

मनला इ स्थिर गराठनु तपो स्थिर भवा को मनला इ ह को २ गारि ब्रह्म ज्ञान मालगाठ
नु ॥ २१ ॥ हे अर्जुन ब्रह्म ज्ञान को अभ्यास गन्त मनुष्य हर ले दुःख शोक यनीन ग
नु रुदावीर्य यनी लोभ मोह यनीन गनु ब्रह्म ज्ञान सिद्ध रुह भनी जांनु भनी
श्री भगवान ले अर्जुन ला इ आग्या गदा भया ॥ २२ ॥ सप्तम ॥ ॥ केरि अर्जुन ले

॥ गगी ॥

विंतिगर्नलाग्या. हेभगवन् निश्चययोविश्वसंसारमा मनैको भ्रमशालेभया
कोहो. केहिमनजस्तौचंचलता दोस्तोवस्तुकेहिछेन. योसयूराग्याकोके
वल मनैलेहोभन्या. न्योमननिर्मलस्थिर कसोगारिहोला हेरुहम. ॥ ॥

अर्जुनउवाच ॥ मनसोहिभवोद्विष्टे मनसंश्चचला पुनमन
साचक्षुतंसर्वनिर्मलोहिमनः कथा ॥ १ ॥ जगद्धाप्रमनश्चेदंमनो
पीदिहिचचलसतन्मनस्ततहमनलिप्यते कथाविभो ॥ २ ॥

मलाइआजागर्नुहस् भनिअर्जुनलेविंतिगया ॥ १ ॥ हेरुहयोजगत्संसारमा
केवल मनैको भ्रमशालेगारिकनव्याप्रभयाकोह. योमनभन्याकोतावहु
नेचंचलेह्योमनलेगयाकोकर्मजोह ॥ ॥ ॥ ॥

राम

॥ २६ ॥

सोहिता कसो गारे को नुक्ति ले पनी लात शोक्तेन सोहि दात मलाइ आजाह
वसुभनी विंति गयो ॥ २ ॥ श्री भगवान आजागर्तु न हे अर्जुन मन मारि द्याका
जाति दोष छु न तिस वै उन्नत रुंछु करि मने मा लीन येनी रुंछु सत मन्या को

मनो दोषा मन सिंवे उत्पत्ति प्रलयतः मनो कुश मनो वीर्य मन कर्म
न लिप्यते ॥ ३ ॥ मनो गंगा मनो तीर्थ मनो देवो निरंजन मनो भान मनश्च
द्रो मन सा मिश्र माहृत ॥ ४ ॥

जो छ सोहिता फेरि संसार माछे विषे चत्या पनिते हि हो पराक्रम गन्या धनी तो हि
हो त्या मन ए सोह भनी ले प रुंछे न भनि जान हे अर्जुन ॥ ३ ॥ श्री भगवान आर्ज

॥ ग. गी ॥

गर्भलागण हे अर्जुन मनभन्दा को गगा स्वरूपनी हो तीर्थ स्वरूपनी हो मनभन्दा को
ता केवल निरञ्जन स्वरूप देवता हो सुख्य पनी चन्द्रमा पनी काल स्वरूप पानि अ

मनो धरित्री आकास मन शक्ती मनः शिव मनो जीवो मन कालो म
न स्थिति मनो र्यश ॥ ५ ॥ मन यु राय मनः कर्म फल स्थ हामनो हर्षो म
नो दुःख मनो भोगिषु रं ॥ ६ ॥ मनो माया मनो मोह मन स्त ॥ ७ ॥

मिसे रूप पनी वायु सो रूप पानि मने हो मन देखी अर्को दोशो को हिछे न भनी
जान ॥ ४ ॥ पृथिवि पनी शक्ती पनी शिव पनी मने हो तस्ते जीव पनी काल पनी
हो करि स्थिति पनी यस स्वरूप पनी मने हो भनि जान भाने भगवान ले आज्ञा गदी

॥ राम ॥

॥ ३ ॥

भया॥ ५॥ फेरि श्री भगवान् आजागदी भया पुरा पयनी पाप यनि दुखे मनेह
कर्मकाभि कोइछापयापनी मनेहो हर्षयनी दुख स्व रूपयनी मने सवेयर

मनोदम॥ मनः का मो मन को धो मन आत्मा परात्पर॥ ७॥ मनो
योगी मनो भोगी मनः कर्ता रमी श्वर॥ मनो ज्ञानी मन ध्यानी मनो
धर्म स्र कर्म क॥ ८॥ एक जन्म भवेदक्षो बहु जन्म मनो न्यथा तथे
वेक मथा पार्थ व हर्था पुन धारयन्॥ ९॥ ॥ ॥ ॥

कम गन्यायनी मनेहो शरीर को माला क इन्द्र जसो स्वरूप भया को मनेहो भनी जी
न॥ ६॥ मायायनी मोहयनी तृह्मायनी दुसैयनी काम को धयनी मनेहो भनी जों न
आत्मा भदायर रखा को परात्मा यनी मनेहो भनी श्री भगवान ले ज्ञान को विस्तार
र अर्जुन लाइ कह दा भया॥ ७॥ हे अर्जुन लुन योगी स्वरूपयनी मनेहो भोगी

॥ ग गी ॥

यती सपूर्णवरावरको कर्ता विना उ न्या ईश्वर स्व रूप यती मने हो ध्यात गयी प
नी ज्ञान स्व रूप यती धर्म स्व रूप यती अधर्म स्व रूप यती मने हो केवल मने हो
भनी ज्ञान भ श्री भगवान ले अर्जुन लाई कह दा भया ८ हे अर्जुन अनेक जन्म
मा एक जन्म वडा भाग्य ले गरि कन मनुष्य हेर चनेरुंछु सर्व जन्म मा बुद्धि मान ताक

मनो योगी मनो भोगी मन कंती अर्जुन कथं नीव कथं काल कथं म
तू जगद्दिन ॥ कथं पुण्य कथं पाप कथं कर्म न लिप्यते ॥ १० ॥

दा चिन्तय निद्रा देत न सर्थ ले हे अर्जुन मन लाई हे पार्थ वठे रे विषय मा मन न लग
उनु एकै अर्थ अस्म मात्रे मन लग्नाई राखनु भनि जान भनि आ पाग न्या ॥ ८ ॥ हे
अर्जुन मन लाई साधना गर्नु जो हो सोहि ता स्थिर योग हो मन लाई साधना गर्
नु जो हो सोहि ता परम गति हो भनि जान भनि श्री भगवान ले आगाग दा भया

॥ राम ॥

॥ २८ ॥

फेरि अर्जुन विनिगछ नहे छह्न जी जीव भन्या को कसो हो काल भन्या को प
नि कसो हो मर भन्या को कसो हो पुण्य पाप भन्या को पनि कसो हो कसो त रहसि
त कर्म गारि क न कसो को ले प कुंदैन सोहि आशा मलाई कहु गुरु वं भनि अर्जुन

भगवान उवाच स्वयं जीव स्वयं काल स्वयं मृत्यु तथा अर्जुन स्वयं परम
स्वयं आप स्वयं कर्म न लिप्यते ॥ ११ ॥ अर्जुन को कस्य दीयते दान को
कस्य च परिग्रहा को वा भोग कृतं चेव को वा दुःखं तनुजने ॥ १२ ॥ ॥

ले विनिगिया ॥ १० ॥ श्री कृष्ण उवाच आशा गर्न लाया हे अर्जुन तुन जीव भन्या को
पनि आफै हो काल भन्या को पनि आफै हो मृत्यु भन्या को पनि आफै हो स
पस्वरूप भन्या को पनि आफै हो ससो विचार जस लाइ हो सो मनुष्य ले गेया क

॥ गगी ॥ कर्मनेऊदैन भनिजानहेममवान कोकसलाइदानदिछ त्पोदानकोकोगगा
छंद कात्पनलिछ त्पोदानलिदाकोउखकोभोगगछ सोहिमलाइआताग
उहवेरभानिअर्जुनलेविनिगया श्रीभगवानआपगछंदानदित्पोपनिआफेहो

श्रीभवागउवाच स्वयंदाता स्वयंग्राहि स्वयंभोगवर्षिपतिभुजं च स्व
यदुषानिर्मलं शृणु चार्जुन ॥ १३ ॥ अर्जुन कथां श्रुत्वा मम श्रुत्वा च कथां स्थि
रयते मन ॥ कथां श्रुत्वा स बधोऽदृष्टं हि जनादन ॥ १४ ॥ ॥ ॥

दानदिन्पापनिआफेहोत्पोलियाकोभोगपनिआफेगर्लात्पोदानदियाकोभो
गपनिआफेगर्नुपछंजानअर्जुन निर्मलतामपनिआफेलेगछ भनिजानभा
नी श्रीभगवागलेअर्जुनलाइआतागया अर्जुनविनिगछंदहेरुहकसोगारिभू

॥ राम ॥

॥ २५ ॥

या को कसो हो अभ्यपति कसो हो यो बवल भया को मन क न स्थिर को गर्ह र के रि मन क
न प्रलय जन्म मरण मापति सबध संयोग गता को हो कसो गी कुं ह यो बात आजग
उरु वसु भति अर्जुन ले वि ति गया कृष्ण जि अज्ञा गर्ह र ॥ १४ ॥ हे अर्जुन सुख स्वरूप

श्री भगवान् वाच ॥ ॥ स्वयं श्रम मश्रम च स्वयं स्वीकृत उत ॥ स्वयं प्रल
य के न श्रम स्वयं सहा रु मता ॥ १५ ॥ अर्जुन वाच ॥ ब्रह्माज्ञानं नराणां च
कथं यद्वर्त्म भवेत् कर्तव्यं ब्रह्म बोधा भक्ति निर्वारा कं ॥ हरि ॥ १६ ॥ ॥

निभा फे हो पूर्ण स्व रूप पति आफे हो वारं वार धिर गर्नु पति आफे हो यो प्रलय गता पति आ
फे हो यो ससार गता पति आफे हो भति श्री भगवान् ले आ ग्या गयी ॥ १५ ॥ अर्जुन विनीत
है नृ हे लक्ष्म मनुष्य लाइ ब्रह्मज्ञान भेया को ता अति दुष्ट भक्तुं बोध कु न्याउ पाय ग म्या पदि

॥ ग. गी. ॥ श्री कृष्ण स्नानं दुष्कृतं भक्त्युक्तं भयाको निर्वाण भक्ती गत्या पछि ब्रह्मज्ञान सहजे
या हो भक्त्या जसो लाछ भनी अर्जुन ले श्री भगवान ली त विनिग्या र भगवान आग्या गर्न लाग्या
१६ ॥ हे अर्जुन जान भया यज्ञ भयो तिर्थ जात्रा भयो इत्यादि सर्व चित्त शुद्धि कृत्वा क्रिया
कुर्वेद भयो अनक सास्त्र हत पति चित्त शुद्धि भया का कुभं या यो मरणा धर्म भया काम गुण
जाने यज्ञ तथा तीर्थ व्रत ते च शुचि क्रिया वेद सास्त्र मती लोक निर्वाण च कथहरे ॥ १ ॥
श्री भगवान स्नानं दानं तथा जाप्यं व्रत पूजा पितृ क्रिया हरि भक्ति विना पार्थ स
र्व कर्म निरर्थक ॥ ३ ॥

॥ हत लाई निर्वाण मुक्ति कसो गारि होला भनि हरि ना राय रास
ग. अर्जुन विनिग्या द भयार रुद्र भयाग्या गर्न लाग्या ॥ २ ॥ हे अर्जुन स्नान भयो दान भयो
जसो जप भयो देवता हत को पूजा भयो तसो पितृ हत को पिड दान क्रिया भयो सो सब
हरि का भक्ति ते एहि छ भया इ सबे ग्या का क्रिया निरर्थक हू भनि जान ॥ ३ ॥

राम

॥ २० ॥

हे अर्जुन नाना अनेक देवता हरू को पूजा गुण भया तैसे नाना कर्म भया को धोसं
पुर्ण मनमा हरिका भक्ति करू भया तो मनुष्य लेग यां का कर्म सबै विरथ कइ करू
भनि जान हे अर्जुन ॥ ४ ॥ हे अर्जुन कोटि आचार गरो सापनि घोडा हाति प्रादि

आचार क्रियते कोटि दान दत्ता हया गजा ॥ आत्मा तत्वे न जाना मिस
व कर्म निरर्थक ॥ ५ ॥ कोटि जन्म कृत पाप पुनर्यन हरि स्मृति ॥ स

र्व पाप विनिमुक्त विष्णु लोका सग कृति ॥ ५ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

भया का अनेक दान गरो सापनि आत्मा रूपि तत्त्व लाइ जा त्या को हे न भया ति संप
र्ण कर्म निरर्थक कइ करू भनि जान ॥ ५ ॥ हे अर्जुन कोटि कोटि अज्ञ गयापनि कोटि
किर्त्ति गयापनि हाति घोडा को दान गयापनि हज्जा शैली दान गयापनि हरि को
भक्ति विना इस वैतिर्थ कहू भनि जान हे अर्जुन कोटि जन्म पर्यंत पाप पाप माने गर्भ

गगी

मनुष्यद्वतापनि फेजिसलेनायके वापनि वडा भक्तिले हरिको स्मरण गोलापनि स
उरार्थानिमागया को पापनाश गरिक न विष्णु लोक जाऊ हरिको स्मरण भया को ए सो
क भनि जान ॥८॥ हे प्रजुन स्त्री हत्या गर्भ भयो गोहत्या गर्भ ब्रह्म हत्या गर्भ वाल बघाटि

स्त्री हत्या सच गोहत्या ब्रह्म हत्या घाटक ॥ भवे द्विष्टु पद पार्थ विष्णु लोक
सगच्छति ॥८॥

गर्भ भयापनि हे पार्थ विष्णु को पद भक्तिले गरिआमनुष्य भज दह सो विष्णु लो
क मा पुत्र जो क भनि जान हे प्रजुन ॥८॥ सुख भया को ह दो चित्र मा विरक्त ज स्को ह
न मेरा निमित्त मा जोता भज म गर्दन अ मार्ग क कर्म मा बार बार कुबुद्धि भया का प्राणि
हृता सदा सर्वदा नर के मा वा सगर्भ भनि जान हे प्रजुन भनि ॥ श्री भगवान् मने प्रजु
न लाइ आता गर्दा भया हे प्रजुन सुख भयापनि दु स्व न या मनि शानि हृले विषय

राम

॥३९॥

वासनाकनसबप्रकारलेगरे संपूर्णदेखि खेचतु खेचतुनसक पापारिहर कनपजन
मपरतत्वकाहिउपायगयावनिप्राप्तहुदैभनिजान॥२॥ हेअर्जुनतत्वभन्याको
क्याहोभान्या आत्मातत्वजोहो सोतानिहंनहो तेहितत्वकोसातानिराकारस्वरु
नसुखानिचदुरववाविषयान्सर्वत्वोहरे॥ परब्रह्मपरतत्वेयादश्रानि
कदाचन॥२॥

पहो॥ योगिहरको तत्वना निराश्रयहुनुजोहोसोहितत्वहोभनिजानहेअर्जुनभनिआ
तागर्हभया॥१०॥ हेअर्जुन तत्वभन्याकोतामेनलेरहितभयाकोनिरंजनप्रसहो प्रति
ब्रतास्त्रीपतितत्वमयिहो पितामाताकोभक्तिवडोगर्वापुत्रपतितत्वस्वरुपेहोभनि

॥ ग. गी. ॥

जान इदित्यजित्वाकोयोगीपनिनत्त्वस्वरूपेहोभनिजानुगुरुकेभक्तिगन्वाशिम्यपनि
नत्त्वस्वरूपेहोभनिभनिजान हेअर्जुनभनिभगवान्त्वेअर्जुनत्वेआज्ञागन्वा हेअ

आत्मानत्त्वमहादेवयोगतत्त्वनिराजन ॥ तत्त्वसाशमिशकारेतत्त्वयोगीति
एअथ ॥ १० ॥ तत्त्वनिरंजनत्त्वत्त्वनारिपतिवृत्ता ॥ तत्त्वपुत्रपिताभक्त
तत्त्वयोगीजनिदिद्य ॥ ११ ॥ श्रीराम ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

जुननिरंजनभगवानपनिनत्त्वहोभनिश्रीभगवान्त्वेअर्जुनत्वेआज्ञागर्दभवा
॥ ११ ॥ इतिश्रीगर्भगीतायानवमोऽध्यायः समाप्त ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ राम ॥

॥ ३२ ॥

आशा संस्कृत

225 I

ASHA ARCHIVES